जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

मामनुस्मर युद्धय च
जयन्ती प्रकाशन लक्ष्मणगढ़

भारत सरकार पंजीसन नं. : 72322/91

शेखावाटी सन्मार्ग

सतीनां वै सतांचैव दातृणां विदुषा तथा।
आकरं गुण शीलानां लक्ष्मणदुर्गं मनोहरम्।।

नमोस्तु रामाय सलक्ष्मणाय देव्यै च तस्यै जनकात्मजायै।
नमोस्तु रुद्रेन्द्र यमानिलेभ्यो नमोस्तु चन्द्रार्कमरुद्गणेभ्यः।।

Mob: 9828665353
Web: www.srrividya.com

पाक्षिक/वर्ष-31/अङ्क - 33 लक्ष्मणगढ़ 16 अप्रैल 2022 मूल्य (विशेषाङ्क सहित) 100/- रु.वार्षिक

नव संवत्सर अभिनन्दन

लक्ष्मणगढ़ | 2 अप्रैल – चैत्र शुक्ला प्रतिपदा – नवसंवत्सर का अभिनन्दन समारोह - श्री मुरलीमनोहर मन्दिर में भाभा इंस्टिट्यूट मुम्बई के न्यूक्लिर साइंटिस्ट एवं टेक्नोलोजी के प्रोफ़ेसर रहे डॉ. नरेन्द्र कुमार जोशी की अध्यक्षता में श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन के सामूहिक मंगलाचरण से प्रारम्भ हुआ | मुख्य अतिथि धानणी के आंजनेय - योग संन्यास आश्रम के स्वामी श्री गोविन्द गिरि थे | विशेष अतिथि थे – धर्मशील उद्योगपति श्री प्रमोद कुमार जसरासरिया, राजस्थान सरकार के विप्र कल्याण बोर्ड के सदस्य पूर्व पार्षद श्री पवन कुमार बूंटोलिया, चिकित्सक श्री पवन कुमार शर्मा, सेवा निवृत्त शिक्षा विभाग लेखा अधिकारी श्री सुरेन्द्र इन्दोरिया एवं आदर्श शिक्षक श्री नन्दकिशोर बिंयाला, (शिशु संस्कार विद्यालय के संचालक) पुजारी श्री जनार्दनाचार्य | स्वागत – माल्यार्पण श्री सुरेश चन्द्र मिश्र – (अंतर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि प्राप्त वॉलीबोल खिलाड़ी एवं अर्जुन पुरस्कार प्राप्त) एवं – श्री जयप्रकाश शर्मा एवं श्री सत्यनारायण नाहरिया, महेश खुडीवाला, कमलेश मिश्र ने किया | ब्लॉक शिक्षा अधिकारी – साहित्यकार श्री रामनिवास शर्मा ने – भगवान् श्री राम के अलौकिक चरित्र पर प्रकाश डालते हुये तथा नव संवत्सर का महत्त्व प्रदिपादित करते हुए पूर्व उपशिक्षा निदेशक श्री अर्जुनलाल वर्मा ने क्षण – क्षण परिवर्तनशील प्रकृति के विराट स्वरुप का प्रभाव रेखांकित किया |

इस अवसर पर 'श्रीविद्या पंचांग' (संपादक - डॉ. महेन्द्र प्रताप जोशी) का लोकार्पण शेखावाटी सन्मार्ग के संपादक श्री शशिकान्त जोशी के साथ माननीय अतिथियों ने किया | पंचांग का वाचन करते हुये – गौड़ ब्राह्मण महासभा के अध्यक्ष आचार्य श्री नटवरलाल जोशी ने बताया कि इस वर्ष के राजा श्री शनि देव एवं प्रधानामात्य – देव गुरु बृहस्पति है | दशसदस्यीय आकाशी मंत्री मंडल में ६ शुभ ग्रह पदाधिकारी हैं – अतः कुल मिलाकर – यह वर्ष जनता के लिये शुभ ही है | आगे गौ – ब्राह्मण एवं प्रजा के भाग्य पर निर्भर है |

मुख्य अतिथि महात्मा श्री गोविन्द गिरि ने बताया कि – निर्गुण – निरंजन – निराकार परम ब्रह्म ही भक्तों के लिये सगुण साकार श्री राम श्री कृष्णादि के रूप में अवतार ग्रहण कर लोकमंगल की अपनी लीला करता है | वेदान्त का परम ब्रह्म – ही भक्तों का भगवान् है | जन -2 का कर्त्तव्य पालन ही – सब के लिये श्रेयस्कर है |

प्रीति सम्मेलन के रूप में – श्री जनार्दनाचार्य एवं मन्दिर के पुजारी श्री पुष्पेन्द्र तथा श्री उपेन्द्र मिश्र ने मधुर भजन प्रस्तुत किये एवं प्रसिद्ध लोकगीत गायक श्री मुरारीलाल शर्मा ने – गण गौरयाँ रै मेले पैली आया रिज्यो जी यह लोकगीत गाकर श्रोताओं को रसाप्यायित किया |

इस अवसर पर – माननीय अध्यक्ष महोदय डॉ. नरेन्द्र जोशी एवं मुख्य अतिथि स्वामी श्री गोविन्द गिरि ने तथा राजस्थान के विद्युत् निगम उदयपुर के एक्स इ एन श्री गणनाथ मिश्र, पूर्व प्रधानाचार्य श्री नरेन्द्र दाधीच, श्री महेश खुडीवाला, श्री सत्यनारायण नाहरिया एवं श्री कमलेश मिश्र ने श्री पवन कुमार बूंटोलिया, श्री सुरेन्द्र इन्दौरिया, श्री नन्दकिशोर बिंयाला तथा लोकप्रिय चिकित्सक श्री फूलचन्द्र शर्मा का – शाल – श्रीफल एवं प्रशस्ति – पत्र देकर सम्मान किया | चिकित्सक श्री फूलचन्द्र शर्मा का – सम्मान उनके सुपुत्र श्री पवन शर्मा ने ग्रहण किया | इस अवसर पर माननीय श्री अध्यक्ष महोदय ने बताया कि भारत की काल गणना विश्व भर में श्रेष्ठ है क्योंकि जहाँ अरब वासी जनो का पंचांग केवल चन्द्रमा और पाश्चात्य पंचांग केवल सूर्य पर आधारित है – भारतीय पंचांग सूर्य, चन्द्र एवं नक्षत्रों पर आधारित है |

उन्होंने युवा पीढ़ी को भारतीय संस्कारों की शिक्षा एवं दीक्षा देने पर जोर दिया – क्योंकि उन्हीं पर भारत का भविष्य निर्भर है | खान – पान की भारतीय विधि पूर्णतः वैज्ञानिक है | इसमें शुद्धि रहने से ही मन – शरीर और आत्मा के शुद्ध रहने की प्रक्रिया संभव है | तामसी भोजन और जल की शुद्धि का ध्यान न रखने से – केवल विकृति ही संभव है | नव वर्ष की शुभकामनाओं के साथ सभी को नीम की कोंपलों, काली मिर्च, मिश्री एवं नवनीत से बना प्रसाद एवं पंचांग वितरित किया गया |

धन्यवाद ज्ञापन कार्यक्रम के संयोजक श्री अवनीश मुद्गल ने किया | समारोह का संचालन आचार्य श्री नटवरलाल जोशी ने किया | मन्दिर व्यवस्थापकों की व्यवस्था सराहनीय रही |

विप्र फाउंडेशन के नये अध्यक्ष श्री राधेश्याम जी शर्मा का स्वागत

श्री सप्तर्षि सेवा मण्डल न्यास
रामगढ़–शेखावाटी (सीकर)
अभिनन्दन – पत्र

आदरणीय श्री राधेश्याम जी शर्मा
"गुरूजी ठण्डाईवाले"
माननीय ट्रस्टी अध्यक्ष श्री सप्तर्षि सेवा मण्डल न्यास, रामगढ़ शेखावाटी के विप्र समाज के अन्तर्राष्ट्रीय संगठन विप्र फाउण्डेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष जैसे गौरवशाली गरिमामय पद पर सुशोभित होकर विप्र समाज ही नहीं अपितु मातृभूमि रामगढ़ शेखावाटी के मान और सम्मान को बढ़ाया है। आज इस समारोह में आपको सम्मानित करते हुए श्री सप्तर्षि सेवा मण्डल न्यास एवं समस्त विप्र समाज रामगढ़ शेखावाटी गौरवान्वित है तथा परमपिता परमेश्वर से आपके उज्वल मंगलमय सुखद समृद्ध दीर्घ जीवन की कामना करता है।
हम है
श्री सप्तर्षि सेवा मण्डल न्यास परिवार एवं विप्र समाज, रामगढ़–शेखावाटी (सीकर) के समस्त बन्धुगण

रामगढ अन्तर्राष्ट्रीय विप्र फाउन्डेशन के अध्यक्ष बनाने के बाद जब श्री राधेश्याम जी शर्मा रामगढ शेखावाटी – पधारे तो उनका भव्य स्वागत किया गया – इस अवसर पर उनको अभिनन्दन पत्र भी भेंट किया गया |

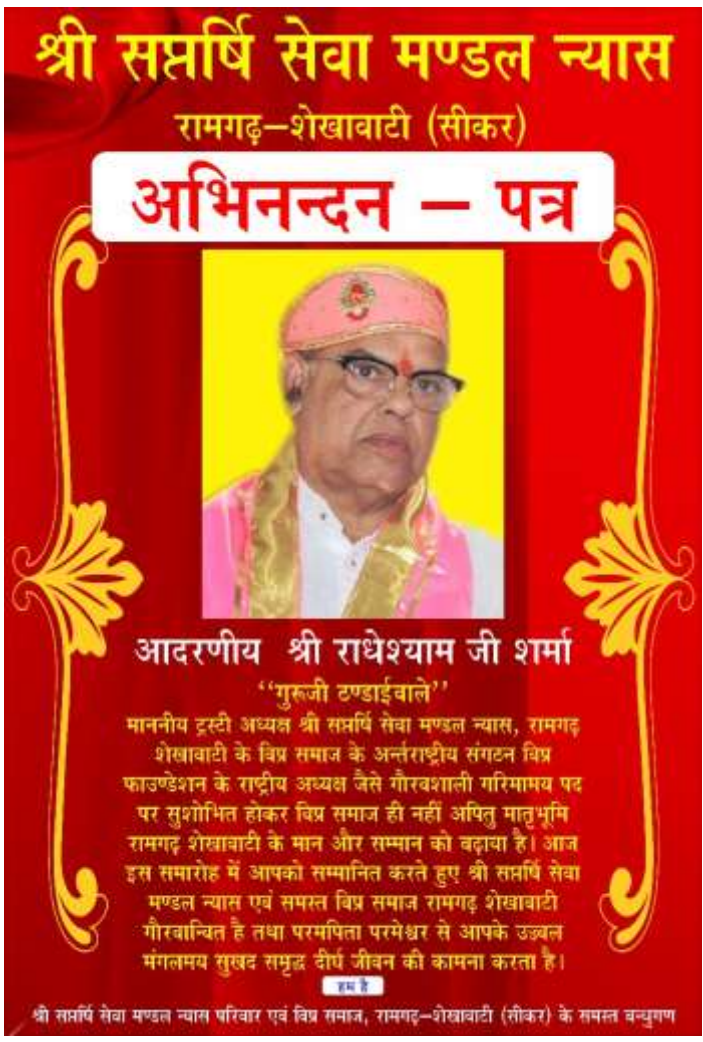

विप्र फाउंडेशन के नये अध्यक्ष

विप्र फाउंडेशन के नये अध्यक्ष श्री राधेश्याम जी शर्मा का जन्म शुक्ल यजुर्वेदी माध्यन्दिन शाखा शांडिल्य गोत्रीय त्रिप्रवर हरितवाल गौड़ ब्राह्मण तपस्वी विप्रवर श्री पंडित जगदीश प्रसाद जी के यहाँ रामगढ शेखावाटी की पुण्यभूमि में हुआ |

प्रारम्भिक शिक्षा रामगढ में हुई – और बाद की शिक्षा कोलकाता महानगर में | कुल परम्परानुसार पूजा विधि (कर्मकाण्ड एवं पौरोहित्य की शिक्षा) भी सीखी | आयुर्वेद का अध्ययन भी किया | विशिष्ट औषधियों की निर्माण विधि – फार्मूले नुस्खे – भी जाने और इन्दौर को कार्यक्षेत्र बनाकर 'गुरूजी ठंडाई' व्यावसायिक रूप में जनता जनार्दन के समक्ष प्रस्तुत की | स्वाद – गुण, निर्माण वैशिष्ट्य एवं उत्तरोत्तर गुणवत्ता के कारण इसका प्रारम्भ से ही पर्याप्त स्वागत हुआ – और – उद्योग के रूप में आज यह खूब सफल है – और लोकप्रिय पेय के रूप में समाज में समादृत है |

उज्जैन और इन्दौर इनका कार्यक्षेत्र है – और लोक कल्याणकारी सामाजिक कार्यों में ये खुलकर भाग लेते हैं – तन – मन, धन से समाज हित में कर्मठ कार्यकर्ता के रूप में लोकप्रिय है | विचारों के प्रखर राष्ट्रवादी है | रास्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से प्रारम्भ से ही जुड़े है – और संघ के संचालकों के विश्वास पात्र आत्मीय जन के रूप में पहिचाने जाते हैं |

राजनीति क्षेत्र में संघ की विचारधारा के अतिरिक्त नेताओं से भी मधुर सम्बन्ध है और सभी के प्रिय पात्र हैं | वनवासी कल्याण परिषद् के विशिष्ट कार्यकर्ता के रूप में जाने जाते हैं | वनवासियों – आदिवासियों के कल्याण से जुड़े सभी कार्यक्रमों में आपकी विशेष भागीदारी है | उनके – निवास, शिक्षा और संवर्धन पोषण में – निरन्तर कार्यरत है |

प्रवासी राजस्थान – संस्था के संस्थापक में आपके सुप्रयत्नों के फलस्वरुप सन् 2017 में पहले कार्यक्रम में ही 5000 के करीब राजस्थानी परिवार जुड़े | यह संस्था निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है | रामगढ शेखावाटी के सप्तर्षि सेवा मंडन्यास के संस्थापक ट्रस्टी है और प्रारम्भ से इसके लिये प्रयासरत है | सप्तर्षि ब्राह्मण भवन के निर्माण में समर्पित कर्मठ कार्यकर्ता श्री जयकुमार डोकवाल के आकस्मिक – असामयिक देहावसान के कारण जब निर्माण कार्य में अनपेक्षित बाधाएँ आई तो इन्होने आगे बढ़ कर के कार्य संभाला और निर्धारित और पूर्व विचारित तिथि के पूर्व ही निर्माण कार्य सभी का सहयोग लेकर पूर्ण सम्पन्न कराया | अपने परिवार के साथ आपके आता श्री सीताराम जी सहित आप भी सप्तर्षि सेवा मंडल ट्रस्ट के संरक्षक है और इसके माध्यम से ट्रस्ट सेवा कार्यों को अग्रगति देने के कार्य में संलग्न है |

प्रभविष्णु व्यक्तित्व, मधुर व्यवहार,ओजस्वी वकृत, बहुमुखी प्रतिभा, सुलझे विचार एवं औदार्य के कारण आप विशिष्ट तो है ही सर्व जन प्रिय भी हैं |

अन्तर्राष्ट्रीय विप्र फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर आपके निर्वाचन से फाउंडेशन को – विचार एवं कार्य के क्षेत्र में नई गति और आत्म निरिक्षण का अवसर मिलेगा और नई गरिमा तो मिलेगी ही आपके सर्वविध साफल्य की कामना करते हैं और कामना करते हैं ब्राह्मण समाज के राष्ट्र के अभ्युदय में सहयोग की दिशा में नये तेजो दीप्त नव अभ्युत्थान की |

शेखावाटी सन्मार्ग

सम्पादकीय

" सन्मार्ग एव सर्वत्र पूज्यतेनाऽपथ: क्वचित् "

भगवान् श्रीराम के द्वारा उपदिष्ट राजनीति

शुक्राचार्यजी अपने 'नीतिसार' में लिखते हैं कि श्रीराम के समान नीतिमान् राजा पृथ्वी पर न कोई हुआ और न कभी होना सम्भव ही है –
'न रामसदृशो राजा पृथिव्यां नीतिमानभूत् ।'

[श्रीराम लक्ष्मण जी से कहते हैं -]

न हि स्वसुखमन्विच्छन् पीडयेत् कृपणं जनम् | कृपणः पीड्यमानो हि मन्युना हन्ति पार्थिवम् ॥

राजा को चाहिये कि वह अपने लिये सुख की इच्छा रखकर दीन - दुःखी लोगों को पीड़ा न दे; क्योंकि सताया जाने वाला मनुष्य दुःख जनित क्रोध के द्वारा अत्याचारी राजा का विनाश कर डालता है।

अहिंसा सूनृता वाणी सत्यं शौचं दया क्षमा |
वर्णिनां लिङ्गिनां चैव सामान्यो धर्म उच्यते ॥
प्रजाः समनुगृह्णीयात् कुर्यादाचारसंस्थितिम् ।
वाक्सूनृता दया दानं दीनोपगतरक्षणम् ॥
इति सङ्गः सतां साधु हितं सत्पुरुषव्रतम् ।
आधिव्याधिपरीताय अद्य श्वो वा विनाशिने ॥
को हि राजा शरीराय धर्मापेतं समाचरेत् ।

किसी भी प्राणी की हिंसा न करना - कष्ट न पहुँचाना, मधुर वचन बोलना, सत्य भाषण करना, बाहर और भीतर से पवित्र रहना एवं शौचाचार का पालन करना, दीनों के प्रति दयाभाव रखना तथा क्षमा (निन्दा आदि को सह लेना) - ये चारों वर्णों तथा आश्रमों के सामान्य धर्म कहे गये हैं। राजा को चाहिये कि वह प्रजा पर अनुग्रह करे और सदाचार के पालनमें संलग्न रहे। मधुर वाणी, दीनों पर दया, देश - काल की अपेक्षा से सत्पात्र को दान, दीनों और शरणागतों की रक्षा तथा सत्पुरुषों का संग - ये सत्पुरुषों के आचार हैं। यह आचार प्रजा संग्रह का उपाय है, जो लोक में प्रशंसित होने के कारण श्रेष्ठ है तथा भविष्य में भी अभ्युदयरूप फल देने वाला होने के कारण हितकारक है। यह शरीर मानसिक चिन्ताओं तथा रोगों से घिरा हुआ है, आज या कल इसका विनाश निश्चित है। ऐसी दशामें इसके लिये कौन राजा धर्म के विपरीत आचरण करेगा?'

शुचिरास्तिक्यपूतात्मा पूजयेद्देवताः सदा | देवतावद् गुरुजनमात्मवच्च सुहृज्जनम् ॥

'बाहर और भीतर से शुद्ध रहकर राजा आस्तिकता (ईश्वर तथा परलोक पर विश्वास) द्वारा अन्तःकरण को पवित्र बनाये और सदा देवताओं का पूजन करे। गुरुजनों का देवताओं के समान ही सम्मान करे तथा सुहृदों को अपने तुल्य मानकर उनका भली भाँति सत्कार करे।'

अनिन्दा परकृत्येषु स्वधर्मपरिपालनम् ।
कृपणेषु दयालुत्वं सर्वत्र मधुरा गिरः ॥
प्राणैरप्युपकारित्वं मित्रायाव्यभिचारिणे ।
गृहागते परिष्वङ्गः शक्त्या दानं सहिष्णुता ॥
स्वसमृद्धिष्वनुत्सेकः परवृद्धिष्वमत्सरः ।
नान्योपतापि वचनं मौनव्रतचरिष्णुता ॥
बन्धुभिर्बद्धसंयोगः सुजने चतुरश्रता।
तच्चित्तानुविधायित्वमिति वृत्तं महात्मनाम् ॥

'दूसरे लोगों के कृत्यों की निन्दा या आलोचना न करना, अपने वर्ण तथा आश्रम के अनुरूप धर्म का निरन्तर पालन, दीनों के प्रति दया, सभी लोक व्यवहारों में सबके प्रति मीठे वचन बोलना, प्राण देकर भी अपने अनन्य मित्र का उपकार करने के लिये उद्यत रहना, घर पर आये हुए मित्र या अन्य सज्जनों को भी हृदयसे लगाना- उनके प्रति अत्यन्त स्नेह एवं आदर प्रकट करना, आवश्यकता हो तो उनके लिये यथाशक्ति धन देना, लोगों के कटु व्यवहार एवं कठोर वचन को भी सहन करना, अपनी समृद्धि के अवसरों पर निर्विकार रहना (हर्ष या दर्ष के वशीभूत न होना), दूसरों के अभ्युदय पर मन में ईर्ष्या या जलन न होना, दूसरों को ताप देने वाली बात न बोलना, मौनव्रत का आचरण (अधिक वाचाल न होना), बन्धुजनों के साथ अटूट सम्बन्ध बनाये रखना, सज्जनों के प्रति चतुरश्रता (अवक्र-सरल भाव में उनका समारा धन), उनकी हार्दिक सम्मतिके अनुसार कार्य करना -ये महात्माओं के आचार हैं।'

आजीव्यः सर्वसत्त्वानां राजा पर्जन्यवद्भवेत् ।
आयद्वारेषु सर्वेषु कुर्यादाप्तान् परीक्षितान् ।
आददीत धनं तैस्तु भास्वानुस्खैरिवोदकम् ॥

'राजा मेघ की भाँति समस्त प्राणियों को आजीविका प्रदान करने वाला हो। उसके यहाँ आय के जितने द्वार (साधन) हों, उन सब पर वह विश्वस्त एवं परीक्षित किये गये लोगों को नियुक्त करे। जैसे सूर्य अपनी किरणों द्वारा पृथ्वी से जल लेता है, उसी प्रकार राजा उन आयुक्त पुरुषों द्वारा धन ग्रहण करे।'

साम दानं च भेदश्च दण्डोपेक्षेन्द्रजालकम् ।
मायोपायाः सप्त परे निक्षिपेत् साधनाय तान् ॥

'साम, दान, दण्ड, भेद, उपेक्षा, इन्द्रजाल और माया- ये सात उपाय हैं; इनका शत्रुके प्रति प्रयोग करना चाहिये। इन उपायों से शत्रु वशीभूत हो जाता है।'

राजा को उदार, सौम्य, धार्मिक, निर्व्यसन, विद्वान्, शुद्ध तथा रहस्यज्ञ होना चाहिये। उसे वेदान्त, न्याय तथा दण्डनीति का विद्वान् और अपने दोषों का ज्ञाता होना चाहिये। कोई काम करने के पहले उस पर उसे स्वयं तथा मंत्रियों के साथ एकान्त में अच्छी तरह विचार करना चाहिये। किसी भी महत्त्वपूर्ण कार्य में शुभ मुहूर्त, नीति और आथर्वणिक प्रयोगों का उपयोग किया जा सकता है। अच्छा तो यह है कि राजा योग्य व्यक्तियों द्वारा श्रौत – स्मार्तकर्मों का अनुष्ठान करता रहे। राजा का कर्तव्य है कि वह अप्राप्त धन, भूमि आदि वस्तु धर्म मार्ग से प्राप्त करे, प्राप्त की रक्षा करे तथा उन्हें बढ़ाये और फिर उन्हें पात्रों में प्रदान भी करे। दत्त वस्तुओं का आगामी राजाओं द्वारा भी पालन होता रहे, इसलिये दान-पत्र आदि का उचित उल्लेख होना चाहिये । राजधानी ऐसे प्रदेशमें भी होनी चाहिये, जो रम्य हो और जहाँ मनुष्यों के लिये अन्न तथा पशुओं के लिये चारा पर्याप्त मिल सके। वहाँ विस्तृत दुर्ग (किला) बनवाना चाहिये, जिसमें जन, धनकी पूर्ण रक्षा हो सके। राजा को चाहिये कि वह विद्वान् ब्राह्मणों के प्रति क्षमाशील, शत्रुओं के प्रति क्रोध युक्त और भृत्यवर्ग तथा प्रजाओं के प्रति पिता के समान हो । प्रजा के पुण्य का छठा भाग राजा को मिलता है, अतः न्याय से प्रजा का पालन ही राजा के लिये सबसे बड़ा धर्म और दान है। अन्यायियों से ठीक रक्षा न कर सकने के कारण प्रजा के पापों का आधा भाग राजा को मिलता है, अत: उसे सदा सावधान रहना चाहिये।

शशिकान्त जोशी
सम्पादक

छत्रपति शिवाजी भोसले

शिवाजी (1630-1680 ई.) भारत के एक महान राजा एवं रणनीतिकार थे जिन्होंने 1674 ई. में पश्चिम भारत में मराठा साम्राज्य की नींव रखी। इसके लिए उन्होंने मुगल साम्राज्य के शासक औरंगज़ेब से संघर्ष किया। सन् 1674 में रायगढ़ में उनका राज्याभिषेक हुआ और वे "छत्रपति" बने। परिस्थिति भिन्न होती तो तत्वदर्शी श्री समर्थ स्वामी रामदास जी के संरक्षण में शिवाजी मोक्ष का मार्ग चुनते|

छत्रपति शिवाजी महाराज ने अपनी अनुशासित सेना एवं सुसंगठित प्रशासनिक इकाइयों की सहायता से एक योग्य एवं प्रगतिशील प्रशासन प्रदान किया। उन्होंने समर-विद्या में अनेक नवाचार किए तथा छापामार युद्ध (guerilla warfare) की नयी शैली (शिवसूत्र) विकसित की। उन्होंने प्राचीन हिन्दू राजनीतिक प्रथाओं तथा दरबारी शिष्टाचारों को पुनर्जीवित किया और मराठी एवं संस्कृत को राजकाज की भाषा बनाया। वे भारतीय स्वाधीनता संग्राम में नायक के रूप में स्मरण किए जाने जाते हैं। बाल गंगाधर तिलक ने राष्ट्रीयता की भावना के विकास के लिए शिवाजी जन्मोत्सव की शुरुआत की।

उनके दादाजी मालोजी भोसले (1552–1597) अहमदनगर सल्तनत के एक प्रभावशाली जनरल थे, पुणे चाकन और इंदापुर के देशमुख थे। मालो जी के बेटे शाहजी भी बीजापुर सुल्तान के दरबार में बहुत प्रभावशाली राजनेता थे। शाहजी की पत्नी जीजाबाई से शिवाजी का जन्म हुआ।

आरम्भिक जीवन

शिवाजी का जन्म 19 फरवरी, 1630 को शिवनेरी दुर्ग में हुआ था। उनके पिता शाहजी भोंसले एक शक्तिशाली सामंत थे। उनकी माता जीजाबाई जाधव कुल में उत्पन्न असाधारण प्रतिभाशाली महिला थी। शिवाजी के बड़े भाई का नाम सम्भाजी था जो अधिकतर समय अपने पिता शाहजी भोसलें के साथ ही रहते थे। शाहजी राजे की दूसरी पत्नी तुकाबाई मोहिते थीं। उनसे एक पुत्र हुआ जिसका नाम एकोजी राजे था। शिवाजी महाराज के चरित्र पर माता-पिता का बहुत प्रभाव पड़ा। उनका बचपन उनकी माता के मार्गदर्शन में बीता। उन्होंने राजनीति एवं युद्ध की शिक्षा ली थी। वे उस युग के वातावरण और घटनाओं को भली प्रकार समझने लगे थे। उनके हृदय में स्वाधीनता की लौ प्रज्ज्वलित हो गयी थी। उन्होंने कुछ स्वामिभक्त साथियों का संगठन किया।

वैवाहिक जीवन

शिवाजी का विवाह सन् 14 मई 1640 में सइबाई निंबाळकर के साथ लाल महल, पुणे में हुआ था। उन्होंने कुल 8 विवाह किए थे। वैवाहिक राजनीति के जरिए उन्होंने सभी मराठा सरदारों को एक छत्र के नीचे लाने में सफलता प्राप्त की। शिवाजी की पत्नियाँ:

सईंबाई निम्बालकर – बच्चे : संभाजी

सखुबाई राणूबाई (अम्बिकाबाई); सोयराबाई मोहिते - (बच्चे- दीपबै, राजाराम); पुतळाबाई पालकर (1653-1680), गुणवन्ताबाई इंगले; सगुणाबाई शिर्के, काशीबाई जाधव, लक्ष्मीबाई विचारे, सकवारबाई गायकवाड़ - (कमलाबाई) (1656-1680)।

सैनिक वर्चस्व का आरम्भ

उस समय बीजापुर का राज्य आपसी संघर्ष तथा विदेशी आक्रमणकाल के दौर से गुजर रहा था। ऐसे साम्राज्य के सुल्तान की सेवा करने के बदले वे मावलों को बीजापुर के ख़िलाफ संगठित करने लगे। मावल प्रदेश पश्चिम घाट से जुड़ा है और कोई 150 किलोमीटर लम्बा और 30 किलोमीटर चौड़ा है। वे संघर्षपूर्ण जीवन व्यतीत करने के कारण कुशल योद्धा माने जाते हैं। इस प्रदेश में मराठा और सभी जाति के लोग रहते हैं। शिवाजी महाराज इन सभी जाति के लोगों को लेकर मावलों (मावळा) नाम देकर सभी को संगठित किया और उनसे सम्पर्क कर उनके प्रदेश से परिचित हो गए थे। मावल युवकों को लाकर उन्होंने दुर्ग निर्माण का कार्य आरम्भ कर दिया था। मावलों का सहयोग शिवाजी महाराज के लिए बाद में उतना ही महत्वपूर्ण साबित हुआ जितना शेरशाह सूरी के लिए अफ़गानों का साथ।

उस समय बीजापुर आपसी संघर्ष तथा मुग़लों के आक्रमण से परेशान था। बीजापुर के सुल्तान आदिलशाह ने बहुत से दुर्गों से अपनी सेना हटाकर उन्हें स्थानीय शासकों या सामन्तों के हाथ सौंप दिया था। जब आदिलशाह बीमार पड़ा तो बीजापुर में अराजकता फैल गई और शिवाजी महाराज ने अवसर का लाभ उठाकर बीजापुर में प्रवेश का निर्णय लिया। शिवाजी महाराज ने इसके बाद के दिनों में बीजापुर के दुर्गों पर अधिकार करने की नीति अपनाई। सबसे पहला दुर्ग था रोहिदेश्वर का दुर्ग।

दुर्गों पर नियंत्रण

रोहिदेश्वर का दुर्ग सबसे पहला दुर्ग था जिसके शिवाजी महाराज ने सबसे पहले अधिकार किया था। उसके बाद तोरणा का दुर्ग जो पूणे के दक्षिण पश्चिम में 30 किलोमीटर की दूरी पर था। शिवाजी ने सुल्तान आदिलशाह के पास अपना दूत भेजकर खबर भिजवाई की वे पहले किलेदार की तुलना में बेहतर रकम देने को तैयार हैं और यह क्षेत्र उन्हें सौंप दिया जाये। उन्होंने आदिलशाह के दरबारियों को पहले ही रिश्वत देकर अपने पक्ष में कर लिया था और अपने दरबारियों की सलाह के मुताबिक आदिलशाह ने शिवाजी महाराज को उस दुर्ग का अधिपति बना दिया। उस दुर्ग में मिली सम्पत्ति से शिवाजी महाराज ने दुर्ग की सुरक्षात्मक कमियों की मरम्मत का काम करवाया। इससे कोई 10 किलोमीटर दूर राजगढ़ का दुर्ग था और शिवाजी महाराज ने इस दुर्ग पर भी अधिकार कर लिया।शिवाजी महाराज की इस साम्राज्य विस्तार की नीति की भनक जब आदिलशाह को मिली तो वह क्षुब्ध हुआ। उसने शाहजी राजे को अपने पुत्र को नियन्त्रण में रखने को कहा। शिवाजी महाराज ने अपने पिता की परवाह किये बिना अपने पिता के क्षेत्र का प्रबन्ध अपने हाथों में ले लिया और नियमित लगान बन्द कर दिया।

राजगढ़ के बाद उन्होंने चाकन के दुर्ग पर अधिकार कर लिया और उसके बाद कोंडना के दुर्ग पर अधिकार किया। शाहजहाँ ने परेशान होकर सबसे काबिल मिर्जाराजा जयसिंह को भेजकर शिवाजी के 23 किलों पर कब्जा किया। उसने पुरंदर के किले को नष्ट कर दिया। शिवाजी को इस संधि की शर्तो को मानते हुए अपने पुत्र संभाजी को मिर्जाराजा जयसिंह को सौपना पड़ा। बाद में शिवाजी महाराज के मावला तानाजी मालुसरे ने कोंढाणा दुर्ग पर कब्जा किया पर उस युद्ध में वह वीरगति को प्राप्त हुआ उसकी याद में कोंडना पर अधिकार करने के बाद उसका नाम सिंहगढ़ रखा गया। शाहजी राजे को पुणे और सूपा की जागीरदारी दी गई थी और सूपा का दुर्ग उनके सम्बंधी बाजी मोहिते के हाथ में था। शिवाजी महाराज ने रात के समय सूपा के दुर्ग पर आक्रमण करके दुर्ग पर अधिकार कर लिया और बाजी मोहिते को शाहजी राजे के पास कर्नाटक भेज दिया। उसकी सेना का कुछ भाग भी शिवाजी महाराज की सेवा में आ गया। इसी समय पुरन्दर के किलेदार की मृत्यु हो गई।

किले के उत्तराधिकार के लिए उसके तीनों बेटों में लड़ाई छिड़ गई। दो भाइयों के निमंत्रण पर शिवाजी महाराज पुरन्दर पहुंचे और कूटनीति का सहारा लेते हुए उन्होंने सभी भाइयों को बन्दी बना लिया। इस तरह पुरन्दर के किले पर भी उनका अधिकार स्थापित हो गया। 1647 ईस्वी तक वे चाकन से लेकर नीरा तक के भूभाग के भी अधिपति बन चुके थे। अपनी बढ़ी सैनिक शक्ति के साथ शिवाजी महाराज ने मैदानी इलाकों में प्रवेश करने की योजना बनाई।

एक अश्वारोही सेना का गठन कर शिवाजी महाराज ने आबाजी सोन्देर के नेतृत्व में कोंकण के विरुद्ध एक सेना भेजी। आबाजी ने कोंकण सहित नौ अन्य दुर्गों पर अधिकार कर लिया। इसके अलावा ताला, मोस्माला और रायटी के दुर्ग भी शिवाजी महाराज के अधीन आ गए थे। लूट की सारी सम्पत्ति रायगढ़ में सुरक्षित रखी गई। कल्याण के गवर्नर को मुक्त कर शिवाजी महाराज ने कोलाबा की ओर रुख किया और यहाँ के प्रमुखों को विदेशियों के ख़िलाफ़ युद्ध के लिए उकसाया।

शाहजी की बंदी और युद्धविराम

बीजापुर का सुल्तान शिवाजी महाराज की हरकतों से पहले ही आक्रोश में था। उसने शिवाजी महाराज के पिता को बन्दी बनाने का आदेश दे दिया। शाहजी राजे उस समय कर्नाटक में थे और एक विश्वासघाती सहायक बाजी घोरपड़े द्वारा बन्दी बनाकर बीजापुर लाए गए। उन पर यह भी आरोप लगाया गया कि उन्होंने कुतुबशाह की सेवा प्राप्त करने की कोशिश की थी, जो गोलकुंडा का शासक था और इस कारण आदिलशाह का शत्रु। बीजापुर के दो सरदारों की मध्यस्थता के बाद शाहजी महाराज को इस शर्त पर मुक्त किया गया कि वे शिवाजी महाराज पर लगाम कसेंगे। अगले चार वर्षों तक शिवाजी महाराज ने बीजापुर के ख़िलाफ कोई आक्रमण नहीं किया। इस दौरान उन्होंने अपनी सेना संगठित की।

प्रभुता का विस्तार

शाहजी की मुक्ति की शर्तों के मुताबिक शिवाजी राजाने बीजापुर के क्षेत्रों पर आक्रमण तो नहीं किया पर उन्होंने दक्षिण-पश्चिम में अपनी शक्ति बढ़ाने की चेष्टा की, पर इस क्रम में जावली का राज्य बाधा का काम कर रहा था। यह राज्य सातारा के सुदूर उत्तर पश्चिम में वामा और कृष्णा नदी के बीच में स्थित था। यहाँ का राजा चन्द्रराव मोरे था जिसने ये जागीर शिवाजी से प्राप्त की थी। शिवाजी ने मोरे शासक चन्द्रराव को स्वराज में शमिल होने को कहा, पर चन्द्रराव बीजापुर के सुल्तान के साथ मिल गया। सन् 1656 में शिवाजी ने अपनी सेना लेकर जावली पर आक्रमण कर दिया। चन्द्रराव मोरे और उसके दोनों पुत्रों ने शिवाजी के साथ लड़ाई की पर अन्त में वे बन्दी बना लिए गए पर चन्द्रराव भाग गया। स्थानीय लोगों ने शिवाजी के इस कृत्य का विरोध किया, पर वे विद्रोह को कुचलने में सफल रहे। इससे शिवाजी को उस दुर्ग में संग्रहित आठ वंशों की सम्पत्ति मिल गई। इसके अलावा कई मावल सैनिक मुरारबाजी देशपांडे भी शिवाजी की सेना में सम्मिलित हो गए।

मुगलों से पहली मुठभेड़

शिवाजी के बीजापुर तथा मुगल दोनों शत्रु थे। उस समय शहज़ादा औरंगजेब दक्कन का सूबेदार था। इसी समय 1 नवम्बर 1656 को बीजापुर के सुल्तान आदिलशाह की मृत्यु हो गई जिसके बाद बीजापुर में अराजकता का माहौल पैदा हो गया। इस स्थिति का लाभ उठाकर औरंगज़ेब ने बीजापुर पर आक्रमण कर दिया और शिवाजी ने औरंगजेब का साथ देने की बजाय उसपर धावा बोल दिया। उनकी सेना ने जुन्नार नगर पर आक्रमण कर ढेर सारी सम्पत्ति के साथ 200 घोड़े लूट लिये। अहमदनगर से 700 घोड़े, चार हाथी के अलावा उन्होंने गुण्डा तथा रेसिन के दुर्ग पर भी लूटपाट मचाई। इसके परिणामस्वरूप औरंगजेब शिवाजी से खफ़ा हो गया और मैत्री वार्ता समाप्त हो गई। शाहजहां के आदेश पर औरंगजेब ने बीजापुर के साथ सन्धि कर ली और इसी समय शाहजहां बीमार पड़ गया। उसके व्याधिग्रस्त होते ही औरंगज़ेब उत्तर भारत चला गया और वहां शाहजहां को कैद करने के बाद मुगल साम्राज्य का शाह बन गया।

कोंकण पर अधिकार

दक्षिण भारत में औरंगजेब की अनुपस्थिति और बीजापुर की डावाँडोल राजनीतिक स्थित को जानकर शिवाजी ने समरजी को जंजीरा पर आक्रमण करने को कहा। पर जंजीरा के सिद्दियों के साथ उनकी लड़ाई कई दिनों तक चली। इसके बाद शिवाजी ने खुद जंजीरा पर आक्रमण किया और दक्षिण कोंकण पर अधिकार कर लिया और दमन के पुर्तगालियों से वार्षिक कर एकत्र किया। कल्याण तथा भिवण्डी पर अधिकार करने के बाद वहां नौसैनिक अड्डा बना लिया। इस समय तक शिवाजी 40 दुर्गों के मालिक बन चुके थे।

बीजापुर से संघर्ष

इधर औरंगजेब के आगरा (उत्तर की ओर) लौट जाने के बाद बीजापुर के सुल्तान ने भी राहत की सांस ली। अब शिवाजी ही बीजापुर के सबसे प्रबल शत्रु रह गए थे। शाहजी को पहले ही अपने पुत्र को नियन्त्रण में रखने को कहा गया था पर शाहजी ने इसमें अपनी असमर्थता जाहिर की। शिवाजी से निपटने के लिए बीजापुर के सुल्तान ने अब्दुल्लाह भटारी (अफ़ज़ल खां) को शिवाजी के विरूद्ध भेजा। अफ़जल ने 120000 सैनिकों के साथ 1659 में कूच किया। तुलजापुर के मन्दिरों को नष्ट करता हुआ वह सतारा के 30 किलोमीटर उत्तर वाई, शिरवल के नजदीक तक आ गया। पर शिवाजी प्रतापगढ़ के दुर्ग पर ही रहे। अफजल खां ने अपने दूत कृष्णजी भास्कर को सन्धि-वार्ता के लिए भेजा। उसने उसके मार्फत ये सन्देश भिजवाया कि अगर शिवाजी बीजापुर की अधीनता स्वीकार कर ले तो सुल्तान उसे उन सभी क्षेत्रों का अधिकार दे देंगे जो शिवाजी के नियन्त्रण में हैं। साथ ही शिवाजी को बीजापुर के दरबार में एक सम्मानित पद प्राप्त होगा। हालांकि शिवाजी के मंत्री और सलाहकार अस सन्धि के पक्ष में थे पर शिवाजी को ये वार्ता रास नहीं आई। उन्होंने कृष्णजी भास्कर को उचित सम्मान देकर अपने दरबार में रख लिया और अपने दूत गोपीनाथ को वस्तुस्थिति का जायजा लेने अफजल खां के पास भेजा। गोपीनाथ और कृष्णजी भास्कर से शिवाजी को ऐसा लगा कि सन्धि का षडयन्त्र रचकर अफजल खां शिवाजी को बन्दी बनाना चाहता है।

अतः उन्होंने युद्ध के बदले अफजल खां को एक बहुमूल्य उपहार भेजा और इस तरह अफजल खां को सन्धि वार्ता के लिए राजी किया। सन्धि स्थल पर दोनों ने अपने सैनिक घात लगाकर रखे थे मिलने के स्थान पर जब दोनों मिले तब अफजल खां ने अपनी कटार से शिवाजी पर वार किया बचाव में शिवाजी ने अफजल खां को अपने वस्त्रों में छिपाकर लाये वाघनखो से मार दिया (10 नवम्बर 1659)।

अफजल खां की मृत्यु के बाद शिवाजी ने पन्हाला के दुर्ग पर अधिकार कर लिया। इसके बाद पवनगढ़ और वसंतगढ़ के दुर्गों पर अधिकार करने के साथ ही साथ उन्होंने रूस्तम खां के आक्रमण को विफल भी किया। इससे राजापुर तथा दावुल पर भी उनका कब्जा हो गया। अब बीजापुर में आतंक का माहौल पैदा हो गया और वहां के सामन्तों ने आपसी मतभेद भुलाकर शिवाजी पर आक्रमण करने का निश्चय किया। 2 अक्टूबर 1665 को बीजापुरी सेना ने पन्हाला दुर्ग पर अधिकार कर लिया। शिवाजी संकट में फंस चुके थे, पर रात्रि के अंधकार का लाभ उठाकर वे भागने में सफल रहे। बीजापुर के सुल्तान ने स्वयं कमान सम्हालकर पन्हाला, पवनगढ़ पर अपना अधिकार वापस ले लिया, राजापुर को लूट लिया और शृंगारगढ़ के प्रधान को मार डाला। इसी समय कर्नाटक में सिद्दीजौहर के विद्रोह के कारण बीजापुर के सुल्तान ने शिवाजी के साथ समझौता कर लिया। इस सन्धि में शिवाजी के पिता शाहजी ने मध्यस्थता का काम किया। सन् 1662 में हुई इस सन्धि के अनुसार शिवाजी को बीजापुर के सुल्तान द्वारा स्वतंत्र शासक की मान्यता मिली। इसी सन्धि के अनुसार उत्तर में कल्याण से लेकर दक्षिण में पोण्डा तक (250 किलोमीटर) का और पूर्व में इन्दापुर से लेकर पश्चिम में दावुल तक (150 किलोमीटर) का भूभाग शिवाजी के नियन्त्रण में आ गया। शिवाजी की सेना में इस समय तक 30000 पैदल और 1000 घुड़सवार हो गए थे।

मुगलों से संघर्ष

उत्तर भारत में बादशाह बनने की होड़ खत्म होने के बाद औरंगजेब का ध्यान दक्षिण की तरफ गया। वह शिवाजी की बढ़ती प्रभुता से परिचित था और उसने शिवाजी पर नियन्त्रण रखने के उद्देश्य से अपने मामा शाइस्ता खाँ को दक्षिण का सूबेदार नियुक्त किया। शाइस्का खाँ अपने 1,50,000 फ़ौज लेकर सूपन और चाकन के दुर्ग पर अधिकार कर पूना पहुँच गया। उसने ३ साल तक मावल में लुटमार की। एक रात शिवाजी ने अपने 350 मवलो के साथ उनपर हमला कर दिया। शाइस्ता तो खिड़की के रास्ते बच निकलने में कामयाब रहा पर उसे इसी क्रम में अपनी चार अंगुलियों से हाथ धोना पड़ा। शाइस्ता खाँ के पुत्र अबुल फतह तथा चालीस रक्षकों और अनगिनत सैनिकों का कत्ल कर दिया गया।यहॉ पर मराठों ने अन्धेरे मे स्त्री पुरूष के बीच भेद न कर पाने के कारण खान के जनान खाने की बहुत सी औरतों को मार डालाथा। इस घटना के बाद औरंगजेब ने शाइस्ता को दक्कन के बदले बंगाल का सूबेदार बना दिया और शाहजादा मुअज्जम शाइस्ता की जगह लेने भेजा गया।

सूरत में लूट

इस जीत से शिवाजी की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। 6 साल शाईस्ता खान ने अपनी 1,50,000 फ़ौज लेकर राजा शिवाजी का पुरा मुलुख जलाकर तबाह कर दिया था। इस लिए उस् का हर्जाना वसूल करने के लिये शिवाजी ने मुगल क्षेत्रों में लूटपाट मचाना आरम्भ किया। सूरत उस समय पश्चिमी व्यापारियों का गढ़ था और हिन्दुस्तानी मुसलमानों के लिए हज पर जाने का द्वार। यह एक समृद्ध नगर था और इसका बंदरगाह बहुत महत्वपूर्ण था। शिवाजी ने चार हजार की सेना के साथ 1664 में छः दिनों तक सूरत के धनाढ्य व्यापारियों को लूटा। आम आदमी को उन्होनें नहीं लूटा और फिर लौट गए। इस घटना का ज़िक्र डच तथा अंग्रेजों ने अपने लेखों में किया है। उस समय तक यूरोपीय व्यापारियों ने भारत तथा अन्य एशियाई देशों में बस गये थे। नादिर शाह के भारत पर आक्रमण करने तक (1739) किसी भी यूरोपीय शक्ति ने भारतीय मुगल साम्राज्य पर आक्रमण करने की नहीं सोची थी।

सूरत में शिवाजी की लूट से खिन्न होकर औरंगजेब ने इनायत खाँ के स्थान पर गयासुद्दीन खां को सूरत का फौजदार नियुक्त किया। शहजादा मुअज्जम तथा उपसेनापति राजा जसवंत सिंह की जगह दिलेर खाँ और राजा जयसिंह की नियुक्ति की गई। राजा जयसिंह ने बीजापुर के सुल्तान, यूरोपीय शक्तियाँ तथा छोटे सामन्तों का सहयोग लेकर शिवाजी पर आक्रमण कर दिया। इस युद्ध में शिवाजी को हानि होने लगी और हार की सम्भावना को देखते हुए शिवाजी ने सन्धि का प्रस्ताव भेजा। जून 1665 में हुई इस सन्धि के मुताबिक शिवाजी 23 दुर्ग मुग़लों को दे देंगे और इस तरह उनके पास केवल 12 दुर्ग बच जाएँगे। इन 23 दुर्गों से होने वाली आमदनी 4 लाख हूण सालाना थी। बालाघाट और कोंकण के क्षेत्र शिवाजी को मिलेंगे पर उन्हें इसके बदले में 13 किस्तों में 40 लाख हूण अदा करने होंगे। इसके अलावा प्रतिवर्ष 5 लाख हूण का राजस्व भी वे देंगे। शिवाजी स्वयं औरंगजेब के दरबार में होने से मुक्त रहेंगे पर उनके पुत्र शम्भाजी को मुगल दरबार में खिदमत करनी होगी। बीजापुर के ख़िलाफ़ शिवाजी मुगलों का साथ देंगे।

आगरा में आमंत्रण और पलायन

शिवाजी को आगरा बुलाया गया जहाँ उन्हें लगा कि उन्हें उचित सम्मान नहीं मिल रहा है। इसके विरोध में उन्होंने अपना रोष भरे दरबार में दिखाया और औरंगजेब पर विश्वासघात का आरोप लगाया। औरंगजेब इससे क्षुब्ध हुआ और उसने शिवाजी को नजरबन्द कर दिया और उनपर 5000 सैनिकों के पहरे लगा दिये। कुछ ही दिनों बाद (18 अगस्त 1666 को) राजा शिवाजी को मार डालने का इरादा औरंगजेब का था। लेकिन अपने अदम्य साहस ओर युक्ति के साथ शिवाजी और सम्भाजी दोनों इससे भागने में सफल रहे 17 अगस्त 1666। सम्भाजी को मथुरा में एक विश्वासी ब्राह्मण के यहाँ छोड़ शिवाजी महाराज बनारस, गये, पुरी होते हुए सकुशल राजगढ़ पहुँच गए [2 सितम्बर 1666]। इससे मराठों को नवजीवन सा मिल गया। औरंगजेब ने जयसिंह पर शक करके उसकी हत्या विष देकर करवा डाली। जसवंत सिंह के द्वारा पहल करने के बाद सन् 1668 में शिवाजी ने मुगलों के साथ दूसरी बार सन्धि की। औरंगजेब ने शिवाजी को राजा की मान्यता दी। शिवाजी के पुत्र सम्भाजी को 5000 की मनसबदारी मिली और शिवाजी को पूना, चाकन और सूपा का जिला लौटा दिया गया। पर, सिंहगढ़ और पुरन्दर पर मुग़लों का अधिपत्य बना रहा। सन् 1670 में सूरत नगर को दूसरी बार शिवाजी ने लूटा। नगर से 132 लाख की सम्पत्ति शिवाजी के हाथ लगी और लौटते वक्त उन्होंने मुगल सेना को सूरत के पास फिर से हराया।

राज्याभिषेक

सन् १६७४ तक शिवाजी ने उन सारे प्रदेशों पर अधिकार कर लिया था जो पुरन्दर की सन्धि के अन्तर्गत उन्हें मुग़लों को देने पड़े थे। पश्चिमी महाराष्ट्र में स्वतंत्र हिन्दू राष्ट्र की स्थापना के बाद शिवाजी ने अपना राज्याभिषेक करना चाहा, परन्तु मुस्लिम सैनिको ने ब्राहमणों को धमकी दी कि जो भी शिवाजी का राज्याभिषेक करेगा उनकी हत्या कर दी जायेगी. जब ये बात शिवाजी तक पहुंची कि मुगल सरदार ऐसे धमकी दे रहे है तब शिवाजी ने इसे एक चुनौती के रुप में लिया और कहा कि अब वो उस राज्य के ब्राह्मण से ही अभिषेक करवायेंगे जो मुगलों के अधिकार में है |

शिवाजी के निजी सचिव बालाजी जी ने काशी में तीन दूतो को भेजा, क्योंकि काशी मुगल साम्राज्य के अधीन था. जब दूतों ने संदेश दिया तो काशी के ब्राह्मण काफी प्रसन्न हुये. किंतु मुगल सैनिको को यह बात पता चल गई तब उन ब्राह्मणों को पकड लिया. परंतु युक्ति पूर्वक उन ब्राह्मणों ने मुगल सैनिको के समक्ष उन दूतों से कहा कि शिवाजी कौन है हम नहीं जानते है. वे किस वंश से हैं ? दूतों को पता नहीं था इसलिये उन्होंने कहा हमें पता नहीं है. तब मुगल सैनिको के सरदार के समक्ष उन ब्राह्मणों ने कहा कि हमें कहीं अन्यत्र जाना है, शिवाजी किस वंश से हैं आपने नहीं बताया अत: ऐसे में हम उनके राज्याभिषेक कैसेकर सकते हैं. हम तो तीर्थ यात्रा पर जा रहे हैं और काशीका कोई अन्य ब्राह्मण भी राज्याभिषेक नहीं करेगा | जब तक राजा का पूर्ण परिचय न हो अत: आप वापस जा सकते हैं | मुगल सरदार ने खुश हो कर ब्राह्मणो को छोड दिया और दूतो को पकड कर औरंगजेब के पास दिल्ली भेजने की सोची पर वो भी चुप के से निकल भागे |

वापस लौट कर उन्होने ये बात बालाजी आव तथा शिवाजी को बताई. परंतु आश्चर्यजनक रूप से दो दिन बाद वही ब्राह्मण अपने शिष्यों के साथ रायगढ पहुचें ओर शिवाजी का राज्याभिषेक किया। इसके बाद मुगलों ने फूट डालने की कोशिश की और शिवाजी के राज्याभिषेक के बाद भी पुणे के ब्राह्मणों को धमकी दी कहा कि शिवाजी को राजा मानने से मना करो. ताकि प्रजा भी इसे न माने ! लेकिन उनकी नहीं चली. शिवाजी ने अष्टप्रधान मंडल की स्थापना की. विभिन्न राज्यों के दूतों, प्रतिनिधियों के अलावा विदेशी व्यापारियों को भी इस समारोह में आमंत्रित किया गया। परन्तु उनके राज्याभिषेक के 12 दिन बाद ही उनकी माता का देहांत हो गया था इस कारण से 4 अक्टूबर 1674 को दूसरी बार शिवाजी ने छत्रपति की उपाधि ग्रहण की। दो बार हुए इस समारोह में लगभग 50 लाख रुपये खर्च हुए। इस समारोह में हिन्दवी स्वराज की स्थापना का उद्घोष किया गया था। विजयनगर के पतन के बाद दक्षिण में यह पहला हिन्दू साम्राज्य था। एक स्वतंत्र शासक की तरह उन्होंने अपने नाम का सिक्का चलवाया। इसके बाद बीजापुर के सुल्तान ने कोंकण विजय के लिए अपने दो सेनाधीशों को शिवाजी के विरुद्ध भेजा पर वे असफल रहे।

दक्षिण में विजय

सन् 1677-78 में शिवाजी का ध्यान कर्नाटक की ओर गया। बम्बई के दक्षिण में कोंकण, तुंगभद्रा नदी के पश्चिम में बेळगांव तथा धारवाड़ का क्षेत्र, मैसूर, वैलारी, त्रिचूर तथा जिंजी पर अधिकार करने के बाद ३ अप्रैल, 1680 को शिवाजी का देहान्त हो गया।

मृत्यु और उत्तराधिकार

विष दिलाने के बाद शिवाजी महाराज की मृत्यु 3 अप्रैल 1680 में हुई। उस समय शिवाजी के उत्तराधिकार संभाजी को मिले। शिवाजी के ज्येष्ठ पुत्र संभाजी थे और दूसरी पत्नी से राजाराम नाम एक दूसरा पुत्र था। उस समय राजाराम की उम्र मात्र 10 वर्ष थी अतः मराठों ने शम्भाजी को राजा मान लिया। उस समय औरंगजेब राजा शिवाजी का देहान्त देखकर अपनी पूरे भारत पर राज्य करने कि अभिलाषा से अपनी 5,00,000 सेना सागर लेकर दक्षिण भारत जीतने निकला। औरंगजेब ने दक्षिण में आते ही अदिल्शाही २ दिनो में और कुतुबशाही १ ही दिनो में खतम कर दी। पर राजा सम्भाजी के नेतृत्व में मराठाओ ने ९ साल युद्ध करते हुये अपनी स्वतन्त्रता बरकरार रखी। औरंगजेब के पुत्र शहजादा अकबर ने औरंगजेब के ख़िलाफ़ विद्रोह कर दिया। संभाजी ने उसको अपने यहाँ शरण दी। औरंगजेब ने अब फिर जोरदार तरीके से संभाजी के ख़िलाफ़ आक्रमण करना शुरु किया। उसने अन्ततः 1689 में संभाजी के पत्नी के सगे भाई याने गणोजी शिर्के की मुखबरी से संभाजी को मुकरव खाँ द्वारा बन्दी बना लिया। औरंगजेब ने राजा संभाजी से बदसलूकी की और बुरा हाल कर के मार दिया। अपनी राजा की औरंगजेब द्वारा की गई बदसलूकी और नृशंसता द्वारा मारा हुआ देखकर पूरा मराठा स्वराज्य क्रोधित हुआ। उन्होने अपनी पुरी ताकत से राजाराम के नेतृत्व में मुगलों से संघर्ष जारी रखा। 1700 इस्वी में राजाराम की मृत्यु हो गई। उसके बाद राजाराम की पत्नी ताराबाई 4 वर्षीय पुत्र शिवाजी द्वितीय की संरक्षिका बनकर राज करती रही। आखिरकार 25 साल मराठा स्वराज्य के युद्ध लड के थके हुये औरंगजेब की उसी छत्रपती शिवाजी के स्वराज्य में दफन हुआ।

शासन और व्यक्तित्त्व

शिवाजी को एक कुशल और प्रबुद्ध सम्राट के रूप में जाना जाता है। यद्यपि उनको अपने बचपन में पारम्परिक शिक्षा कुछ खास नहीं मिली थी, पर वे भारतीय इतिहास और राजनीति से सुपरिचित थे। उन्होंने शुक्राचार्य तथा कौटिल्य को आदर्श मानकर कूटनीति का सहारा लेना कई बार उचित समझा था। अपने समकालीन मुगलों की तरह वह भी निरंकुश शासक थे, अर्थात शासन की समूची बागडोर राजा के हाथ में ही थी। पर उनके प्रशासकीय कार्यों में मदद के लिए आठ मंत्रियों की एक परिषद् थी जिन्हें अष्टप्रधान कहा जाता था। इसमें मंत्रियों के प्रधान को पेशवा कहते थे जो राजा के बाद सबसे प्रमुख हस्ती था। अमात्य वित्त और राजस्व के कार्यों को देखता था तो मंत्री राजा की व्यक्तिगत दैनन्दिनी का खयाल रखाता था। सचिव दफ़तरी काम करते थे जिसमे शाही मुहर लगाना और सन्धि पत्रों का आलेख तैयार करना शामिल होते थे। सुमन्त विदेश मंत्री था। सेना के प्रधान को सेनापति कहते थे। दान और धार्मिक मामलों के प्रमुख को पण्डितराव कहते थे। न्यायाधीश न्यायिक मामलों का प्रधान था।

मराठा साम्राज्य तीन या चार विभागों में विभक्त था। प्रत्येक प्रान्त में एक सूबेदार था जिसे प्रान्तपति कहा जाता था। हरेक सूबेदार के पास भी एक अष्टप्रधान समिति होती थी। कुछ प्रान्त केवल करदाता थे और प्रशासन के मामले में स्वतंत्र। न्यायव्यवस्था प्राचीन पद्धति पर आधारित थी। शुक्राचार्य, कौटिल्य और हिन्दू धर्मशास्त्रों को आधार मानकर निर्णय दिया जाता था।

गांव के पटेल फौजदारी मुकदमों की जांच करते थे। राज्य की आय का साधन भूमि से प्राप्त होने वाला कर था पर चौथ और सरदेशमुखी से भी राजस्व वसूला जाता था। 'चौथ' पड़ोसी राज्यों की सुरक्षा की गारंटी के लिए वसूले जाने वाला कर था। शिवाजी अपने को मराठों का *सरदेशमुख* कहते थे और इसी हैसियत से सरदेशमुखी कर वसूला जाता था।

राज मुद्रा

शिवाजी की राजमुद्रा संस्कृत में लिखी हुई एक अष्टकोणीय मुहर (seal) थी जिसका उपयोग वे अपने पत्रों एवं सैन्यसामग्री पर करते थे। उनके हजारों पत्र प्राप्त हैं जिन पर राजमुद्रा लगी हुई है। माना जाता है कि शिवाजी के पिता शाहजीराजे भोसले ने यह राजमुद्रा उन्हें तब प्रदान की थी जब शाहजी ने जीजाबाई और तरुण शिवाजी को पुणे की जागीर संभालने के लिए भेजा था। जिस सबसे पुराने पत्र पर यह राजमुद्रा लगी है वह सन १६३९ का है। मुद्रा पर लिखा वाक्य निम्नलिखित है-

प्रतिपच्चंद्रलेखेव वर्धिष्णुर्विश्ववंदिता शाहसुनोः शिवस्यैषा मुद्रा भद्राय राजते।

(अर्थ : जिस प्रकार बाल चन्द्रमा प्रतिपद (धीरे-धीरे) बढ़ता जाता है और सारे विश्व द्वारा वन्दनीय होता है, उसी प्रकार शाहजी के पुत्र शिव की यह मुद्रा भी बढ़ती जाएगी।)

सम्पादक,प्रकाशक,मुद्रकः शशिकान्तजोशी, जयन्ती प्रकाशन लक्ष्मणगढ़ (सीकर) राजस्थानकृष्णाप्रिन्टर्स के लिये सागरकम्प्यूटर, जयपुर द्वारा मुद्रित,प्रबन्ध सम्पादक- डॉ महेन्द्रआचार्य, समाचार सम्पादक- भानुप्रकाश जोशी